

मेवाड़ का गुहिल वंश — Part 2

तेजसिंह, समरसिंह, रतनसिंह, चित्तौड़ का प्रथम साका (1303 ई.) एवं राणा हम्मीर का संपूर्ण विश्लेषण

1. रावल तेजसिंह (1253-1273 ई.)

रावल जैत्रसिंह के पश्चात उनके पुत्र रावल तेजसिंह मेवाड़ की गद्दी पर आसीन हुए। यद्यपि उनका शासनकाल अपेक्षाकृत संघर्षपूर्ण रहा, तथापि साहित्यिक एवं कलात्मक दृष्टि से यह काल अत्यंत महत्वपूर्ण था।

तेजसिंह — प्रमुख तथ्य सारणी

शासनकाल	1253-1273 ई.
पिता	रावल जैत्रसिंह
धारण की गई उपाधियाँ	परमभट्टारक, महाराजाधिराज, परमेश्वर
वैवाहिक सम्बन्ध	पत्नी जयतल्लदेवी (सोनगरा चौहान उदयसिंह की पुत्री रूपादेवी)
दिल्ली आक्रमण	दिल्ली सुल्तान गयासुद्दीन बलबन का आक्रमण — सुल्तान को कोई सफलता नहीं मिली
मंदिर निर्माण	रानी जयतल्लदेवी ने चित्तौड़गढ़ दुर्ग में श्याम पार्श्वनाथ मंदिर बनवाया
साहित्यात्मक कीर्तिमान	प्रसिद्ध चित्रित ग्रंथ ' श्रावक प्रतिक्रमणसूत्रचूर्णि ' का अंकन (मेवाड़ शैली का प्रथम चित्रित ग्रंथ)
उत्तराधिकारी	पुत्र रावल समरसिंह

परीक्षा बिंदु / टिप्पणी: तेजसिंह की उपाधियाँ — "परम-महा-परम" = परमभट्टारक + महाराजाधिराज + परमेश्वर।

'श्रावक प्रतिक्रमणसूत्रचूर्णि': यह ग्रंथ तेजसिंह के काल की कलात्मक और साहित्यिक उन्नति का एक मील का पत्थर प्रमाण है। इसका चित्रण उस युग की उत्कृष्ट चित्रकला परम्परा को प्रमाणित करता है।

2. रावल समरसिंह (1273-1302 ई.)

तेजसिंह के पश्चात उनके पुत्र रावल समरसिंह मेवाड़ के शासक बने।

समरसिंह — प्रमुख तथ्य

शासनकाल	1273-1302 ई.
उल्लेखनीय सैन्य कार्य	तुर्कों को गुजरात से खदेड़कर गुजरात का उद्धार किया तथा अलाउद्दीन खिलजी की सेना से मेवाड़ से गुजरने का कर (Tax) वसूला।
महत्वपूर्ण स्रोत	चित्तौड़ प्रशस्ति — गुहिल वंश की विभिन्न शाखाओं की जानकारी का प्रमुख ऐतिहासिक स्रोत।
दो पुत्र एवं उनका मार्ग	1. रतनसिंह (मेवाड़ के अगले शासक बने) 2. कुंभकर्ण (नेपाल चले गए और वहाँ गुहिल राजवंश की स्थापना की)

💡 परीक्षा बिंदु: "नेपाल में राजवंश किस गुहिल शासक के वंशज ने स्थापित किया?" — उत्तर: कुंभकर्ण (समरसिंह का पुत्र)।

castles 3. रावल रतनसिंह (1302-1303 ई.) — रावल शाखा के अंतिम शासक

रावल रतनसिंह रावल शाखा के अंतिम और सर्वाधिक त्रासदीपूर्ण शासक थे। उनके शासनकाल की सबसे निर्णायक घटना थी — अलाउद्दीन खिलजी का चित्तौड़ आक्रमण और चित्तौड़ का प्रथम साका।

रतनसिंह — प्रमुख तथ्य

शासनकाल	लगभग 1302-1303 ई. (मात्र 1 वर्ष)
पिता / राजवंश शाखा	रावल समरसिंह / रावल शाखा (गुहिल वंश की मुख्य राजसत्ता)
ऐतिहासिक स्थान	रावल शाखा के अंतिम शासक
प्रमुख युगांतकारी घटना	1303 ई. में अलाउद्दीन खिलजी का चित्तौड़ पर भीषण आक्रमण
मुख्य सेनापति	गोरा (रानी पद्मिनी के चाचा) एवं बादल (रानी के भाई)

✂ 4. चित्तौड़ का प्रथम साका — 1303 ई. (अत्यंत परीक्षोपयोगी)

यह राजस्थान के इतिहास की सर्वाधिक महत्वपूर्ण और परीक्षाओं में बार-बार पूछी जाने वाली घटना है। इसे 'चित्तौड़ का प्रथम साका' कहा जाता है।

4.1 आक्रमण का कारण — बहुआयामी दृष्टिकोण

चित्तौड़ पर अलाउद्दीन के आक्रमण के कारणों को लेकर इतिहासकारों में दो प्रमुख मत हैं:

(A) ऐतिहासिक / राजनीतिक कारण (वास्तविक कारण):

- सामरिक महत्व: मालवा, गुजरात और दक्षिण भारत की ओर जाने वाले मुख्य व्यापारिक और सैन्य मार्ग चित्तौड़ से होकर गुजरते थे।
- व्यापारिक नियंत्रण: चित्तौड़ पर नियंत्रण का अर्थ था पूरे पश्चिमी और दक्षिणी भारत के व्यापारिक मार्ग पर नियंत्रण।
- साम्राज्यवादी विस्तार: अलाउद्दीन की विश्व विजय और 'सिकंदर-ए-सानी' की समग्र नीति का एक अनिवार्य हिस्सा।

(B) साहित्यिक कारण — पद्मावत (1540 ई.):

ग्रंथ / लेखक	'पद्मावत' (महाकाव्य) / मलिक मुहम्मद जायसी
रचनाकाल	1540 ई. (शेरशाह सूरी के शासनकाल में)
साहित्यिक कारण	रावल रतनसिंह की अत्यंत सुंदर पत्नी रानी पद्मिनी को प्राप्त करने की सुल्तान की तीव्र लालसा।
इतिहासकारों का मत	डॉ. दशरथ शर्मा जैसे कुछ इतिहासकारों ने भी इस कारण को आंशिक मान्यता दी है।
ऐतिहासिक वास्तविकता	मूल घटना 1303 की है, जबकि ग्रंथ 1540 में लिखा गया — यानी 237 वर्ष बाद!

⚠ परीक्षा टिक: "जायसी की पद्मावत = 1540 में लिखी गई; घटना = 1303 की" — अतः अत्यधिक समयांतराल के कारण कई इतिहासकार इसे विशुद्ध साहित्यिक कल्पना मात्र मानते हैं।

4.2 आक्रमण का कालक्रम — Step by Step

28 जनवरी 1303: अलाउद्दीन खिलजी एक विशाल सेना के साथ दिल्ली से चित्तौड़ के लिए रवाना हुआ।

शाही शिविर स्थापना: दुर्ग के निकट गंभीरी और बेड़च नदियों के मध्य सुल्तान की सेना ने घेरा डाला (अमीर खुसरो का आँखों देखा विवरण)।

सुल्तान का व्यक्तिगत शिविर: 'चित्तौड़ी' नामक पहाड़ी पर अलाउद्दीन का मुख्य तंबू लगाया गया।

8 माह की लंबी घेराबंदी: किले के भीतर धीरे-धीरे रसद और खाद्य सामग्री पूरी तरह समाप्त हो गई।

26 अगस्त 1303 (सोमवार): मेवाड़ के योद्धाओं ने किले के द्वार खोल दिए।

केसरिया: गोरा और बादल के नेतृत्व में राजपूत योद्धाओं ने केसरिया बाना पहनकर शत्रु पर आत्मघाती आक्रमण किया और वीरगति पाई।

जौहर: रानी पद्मिनी के नेतृत्व में लगभग 1600 वीरांगनाओं ने अग्नि कुंड में कूदकर आत्मदाह (जौहर) किया।

परिणाम: रावल रतनसिंह वीरगति को प्राप्त हुए, अलाउद्दीन खिलजी विजयी हुआ और उसने चित्तौड़ में क्रूर कत्लेआम का आदेश दिया।

4.3 प्रथम साका — विस्तृत विवरण

- (i) **घेराबंदी की अवधि:** 28 जनवरी 1303 को सेना दिल्ली से चली और 26 अगस्त 1303 को विजय मिली। कुल अवधि 6 महीने और 7 दिन (लगभग 8 महीने का सैन्य अभियान) रही। अलाउद्दीन के दरबारी कवि अमीर खुसरो ने इसका सजीव वर्णन किया है।
- (ii) **गोरा और बादल — वीरता की अमर गाथा:** गोरा रानी पद्मिनी के सगे चाचा थे और बादल उनके भाई थे। इन दोनों ने अद्भुत पराक्रम दिखाते हुए वीरगति प्राप्त की।

💡 परीक्षा टिक: "गोरा = चाचा; बादल = भाई" — यह परीक्षा में Match-the-Column में बार-बार पूछा जाता है।

- (iii) **साका की परिभाषा:** पराजय निश्चित होने पर स्त्रियों द्वारा किया गया आत्मदाह 'जौहर' और पुरुषों द्वारा वीरगति प्राप्त करना 'केसरिया' कहलाता है। **साका = जौहर + केसरिया**। इस प्रथम साके में कुल 1600 स्त्रियों ने प्राणों की आहुति दी।

4.4 अलाउद्दीन की विजय के बाद — चित्तौड़ में परिवर्तन

घटनाक्रम	विस्तृत विवरण
26 अगस्त 1303	चित्तौड़ पर खिलजी का अधिकार, दुर्ग में भयानक नरसंहार का आदेश।
नाम परिवर्तन	चित्तौड़ का नाम बदलकर 'खिजाबाद' किया गया (अपने पुत्र खिज्र खां के नाम पर)।
नया शासक	अपने पुत्र खिज्र खां को चित्तौड़ का शासन सौंपा।
पुल निर्माण	खिज्र खां ने दुर्ग की तलहटी में बहने वाली गंभीरी नदी पर मजबूत पुल बनवाया।
तलहटी का मकबरा	1310 ई. का एक फारसी शिलालेख मिला है, जिसमें अलाउद्दीन को 'उस समय का सूर्य' और 'ईश्वर की छाया' कहा गया है।
1316 ई. का मोड़	सुल्तान की मृत्यु के बाद खिज्र खां ने जालोर के मालदेव चौहान (सोनगरा) को चित्तौड़ का कार्यभार सौंप दिया।



5. राणा हम्मीर (1326/1335-1364 ई.) — सिसोदिया वंश का प्रथम महाराणा

5.1 पृष्ठभूमि — रावल शाखा का अंत और राणा शाखा का उदय

1303 ई. में रावल रतनसिंह की वीरगति के साथ ही गुहिल वंश की रावल शाखा का पूर्ण अंत हो गया। इसके पश्चात सीसोदा ग्राम के जागीरदार — जो राणा शाखा के थे — मेवाड़ के पटल पर आए।

5.2 चित्तौड़ पर अधिकार — दो ऐतिहासिक मत

इतिहासकार / स्रोत	ऐतिहासिक मत (हम्मीर ने किसे पराजित किया?)
डॉ. गौरीशंकर हीराचंद ओझा	मालदेव सोनगरा के पुत्र जयसिंह (जैसा) चौहान को पराजित कर चित्तौड़ जीता।
रणकपुर प्रशस्ति	मालदेव चौहान के पुत्र बनवीर चौहान को पराजित कर चित्तौड़ पर पुनः अधिकार किया।

5.3 चित्तौड़ विजय की तिथि — विवाद

इतिहासकार	प्रतिपादित तिथि	मुख्य आधार
डॉ. ओझा	लगभग 1326 ई.	अनुमान (शोध के समय करेड़ा शिलालेख का ज्ञान उपलब्ध नहीं था)
रामवल्लभ सोमानी	1335 ई. के पश्चात	करेड़ा का जैन मंदिर शिलालेख (1335 ई.)

करेड़ा के शिलालेख का महत्व: 1335 ई. के इस शिलालेख में चित्तौड़ पर पृथ्वीचंद्र (बनवीर का अन्य नाम या सोनगरा परिवार का सदस्य) का शासन बताया गया है। अतः सोमानी जी के अनुसार हम्मीर ने चित्तौड़ 1335 ई. के बाद ही जीता था।



परीक्षा टिप: "करेड़ा शिलालेख (1335) → सोमानी → 1335 के बाद; ओझा → 1326" — परीक्षाओं के विकल्प अनुसार दोनों तथ्य ध्यान में रखें।

5.4 'महाराणा' और 'सिसोदिया' — नामकरण परम्परा

अत्यंत महत्वपूर्ण: राणा हम्मीर की चित्तौड़ विजय के पश्चात मेवाड़ के शासक 'महाराणा' या 'राणा' कहलाने लगे तथा सीसोदा ग्राम का होने के कारण उनका वंश 'सिसोदिया' कहलाया।

5.5 राणा हम्मीर के बारे में इतिहासकारों के उद्गार

स्रोत / इतिहासकार	उपाधि / उद्गार
कीर्तिस्तम्भ प्रशस्ति (चित्तौड़गढ़)	हम्मीर सिसोदिया = 'विषम घाटी पंचानन' (विकट परिस्थितियों में सिंह के समान)
कर्नल जेम्स टॉड	हम्मीर सिसोदिया = 'उस समय का प्रबल हिन्दू शासक'
रसिकप्रिया की टीका (कुम्भा रचित)	हम्मीर = 'वीर राजा'

5.6 राणा हम्मीर की प्रमुख उपलब्धियाँ

- (i) **अन्नपूर्णा माता मंदिर निर्माण:** चित्तौड़गढ़ दुर्ग में इस भव्य मंदिर का निर्माण करवाया, जिसका उल्लेख महाराणा मोकलजी के शिलालेख में मिलता है।
- (ii) **सिंगोली का युद्ध (बांसवाड़ा):** दिल्ली के सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक ने मेवाड़ पर आक्रमण किया। हम्मीर ने सिंगोली के युद्ध में सुल्तान की सेना को बुरी तरह परास्त किया। दिल्ली के सुल्तान को हराना हम्मीर की सबसे बड़ी सैनिक सर्वोच्चता थी।
- (iii) **सिसोदिया युग की नींव:** इन्होंने मेवाड़ के गौरव को पुनर्स्थापित कर आने वाले महान महाराणाओं (कुम्भा, सांगा, प्रताप) के लिए एक सुदृढ़ आधारशिला रखी।

5.7 राणा हम्मीर — त्वरित तथ्य सारणी

शासनकाल	1326/1335-1364 ई.
पिता / शाखा	राणा अरिसिंह / सीसोदा (राणा) शाखा
मुख्य विजय / युद्ध	चित्तौड़ विजय (सोनगरा चौहानों से) / सिंगोली का युद्ध (तुगलक के विरुद्ध विजय)
मंदिर निर्माण / उपाधि	अन्नपूर्णा माता मंदिर / 'विषम घाटी पंचानन' (कीर्तिस्तम्भ प्रशस्ति अनुसार)
उत्तराधिकारी	पुत्र क्षेत्रसिंह (महाराणा खेता)

Part 2 की समग्र Timeline — एक दृष्टि में

तेजसिंह (1253-1273): बलबन का आक्रमण विफल | 'श्रावक प्रतिक्रमणसूत्रचूर्ण' का चित्रण | श्याम पार्श्वनाथ मंदिर।

समरसिंह (1273-1302): तुर्कों को खदेड़ा | चित्तौड़ प्रशस्ति | पुत्र कुंभकर्ण द्वारा नेपाल में नए वंश की नींव।

रावल रतनसिंह (1302-1303): रावल शाखा के अंतिम शासक | अलाउद्दीन का आक्रमण।

● 1303 ई. — चित्तौड़ का प्रथम साका: गोरा-बादल की वीरगति (केसरिया) | रानी पद्मिनी का जौहर | चित्तौड़ का नाम बदलकर 'खिज्राबाद' किया गया।

Part 2 — विगत वर्षों के प्रश्न (PYQs)

Q1. चित्तौड़ का प्रथम साका किस वर्ष हुआ था? (RPSC)

उत्तर: 1303 ई. (26 अगस्त 1303 को अलाउद्दीन खिलजी की विजय हुई थी)।

Q2. अलाउद्दीन खिलजी के चित्तौड़ आक्रमण (1303) का समकालीन आँखों देखा विवरण किसने लिखा?

उत्तर: अमीर खुसरो (वह सुल्तान के साथ इस अभियान में मौजूद था)।

Q3. 'पद्मावत' महाकाव्य किसके द्वारा और कब लिखा गया?

उत्तर: मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा वर्ष 1540 ई. में (शेरशाह सूरी के काल में)।

Q4. प्रथम साके में वीरगति पाने वाले 'गोरा और बादल' का रानी पद्मिनी से क्या सम्बन्ध था?

उत्तर: गोरा रानी पद्मिनी के चाचा थे और बादल उनके भाई थे।

Q5. अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़गढ़ जीतकर उसका नया नाम क्या रखा था?

उत्तर: खिज्राबाद (अपने पुत्र खिज्र खां के नाम पर)।

Q6. सिंगोली का युद्ध (बांसवाड़ा) किनके मध्य लड़ा गया था?

उत्तर: मुहम्मद बिन तुगलक एवं राणा हम्मीर के मध्य (जिसमें हम्मीर विजयी हुए)।

Q7. कीर्तिस्तम्भ प्रशस्ति में हम्मीर सिसोदिया को किस विशेषण से नवाजा गया है?

उत्तर: 'विषम घाटी पंचानन' (विकट परिस्थितियों में सिंह के सदृश)।

Q8. 'नेपाल में गुहिल वंश की शाखा' की स्थापना करने वाले कुंभकर्ण किसके पुत्र थे?

उत्तर: रावल समरसिंह के।

Q9. तेजसिंह की पत्नी जयतल्लदेवी ने चित्तौड़ में किस मंदिर का निर्माण करवाया था?

उत्तर: श्याम पार्श्वनाथ मंदिर का।